" अंतरी पेटवू ज्ञानज्योत "

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव।

एम.ए. भाग – १.

हिन्दी – निर्धारित पाठ्यक्रम.

[१९९७–९८, १९९८–९९, १९९९–२०००]

इस पाठ्यक्रम का अध्यापन जून, १९९७ से प्रारंभ होगा।

पूरे पाठ्यक्रम का विभाजन दो वर्षों के लिए होगा।

विद्यार्थियों को प्रथम वर्ष में प्रश्नपत्र १ से प्रश्नपत्र ४ तक का और द्वितीय वर्ष में प्रश्न पत्र ५ से प्रश्नपत्र ८ तक का अध्ययन करना होगा।

संपूर्ण हिन्दी विषय लेनेवाले छात्रों के लिए सामान्य स्तर और विशेष स्तर दोनों स्तरों के प्रश्नपत्रों का अध्ययन करना होगा, हिन्दी का गौण विषय के रूप में अध्ययन करनेवाले [अर्थात अन्य विशेष विषय के ३ प्रश्नपत्र और हिन्दी का १ प्रश्नपत्र लेनेवाले] छात्रों को प्रथम वर्ष में "प्रश्नपत्र–१ सामान्य स्तर" का तथा द्वितीय वर्ष में "प्रश्नपत्र ५ सामान्य स्तर" का अध्ययन करना होगा।

प्रश्नपत्र २, ३, ४ और प्रश्नपत्र ६, ७, ८ विशेष स्तर के रहेंगे। इनमें से प्रश्नपत्र ४ और प्रश्नपत्र ८ के अन्तर्गत ६/६ विकल्प रखे गए हैं। छात्रों को इनमें से किसी एक ही वैकल्पिक प्रश्नपत्र का चयन करना होगा।

इस पाठ्यक्रम में प्रतिवर्ष के लिए दो–दो अंतर्विद्याशाखा परियोजनाएँ भी रखी गई हैं। प्रश्नपत्र ४ या प्रश्नपत्र ८ के वैकल्पिक प्रश्नपत्र के बदले विद्यार्थी इनमें से किसी एक विषय का परियोजन के रूप में अध्ययन कर सकता है। परियोजना के विषय का अध्ययन संबंधित अध्ययन केन्द्र द्वारा निर्धारित निर्देशक के निर्देशन में किया जाएगा। परीक्षार्थी को अध्ययन के लिए चुने गए विषय पर कम से कम २५ और अधिक से अधिक ३५ फुलस्केप आकार के पृष्ठों पर हस्तलिखित या टंकलिखित निबंध वर्ष के अंत में अपने निर्देशक के पास जाँच के लिए देना आवश्यक होगा। इस परियोजना के निर्देशक परीक्षक रहेंगे।

– एम.ए. हिन्दी पाठ्यक्रम का उद्देश्य –

१] हिन्दी भाषा एवं साहित्य के संबंध में छात्रों में रुचि निर्माण कर उन्हें हिन्दी का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करना ।

२] छात्रों में साहित्य को समझने, परखने, उसका आस्वाद करने तथा मूल्यांकन करने की दृष्टि बढ़ाना ।

३] हिन्दी साहित्य की प्राचीन एवं आधुनिक गद्य-पद्य विधाओं का तात्विक परिचय कराना ।

४] साहित्यिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में विभिन्न साहित्यिक विधाओं के विकास क्रम से परिचित कराना ।

५] साहित्य कृतियों का विविध दृष्टियों से विवेचन, विश्लेषण, आस्वादन, तथा समीक्षा करने की दृष्टि देना ।

६] साहित्यकारों के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व का परिचय कराना तथा साहित्य के लिए उनके योगदान पर प्रकाश डालना ।

७] प्राचीन और आधुनिक भारतीय एवं पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांतों और आलोचना प्रणालियों का अध्ययन करना ।

८] भाषा विज्ञान, अनुवाद विज्ञान, शैली विज्ञान, सौंदर्यशास्त्र, लोकसाहित्य आदि विषयों के अध्ययन के लिए छात्रों को प्रोत्साहन देना ।

९] छात्रों की साहित्य संबंधी अभिरुचि तथा आस्वादन क्षमता में अभिवृद्धि करना ।

१०] साहित्यिक विधाओं का अध्ययन करते हुए छात्रों की सृजनशीलता को जगाकर उन्हें भी साहित्य निर्माण के लिए प्रेरणा देना ।

— पाठ्यक्रम की रूपरेखा —

एम. ए. प्रथम वर्ष

प्रश्न पत्र १ : सामान्य स्तर : आधुनिक गद्य-उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, संस्मरण।

प्रश्न पत्र २ : विशेष स्तर : प्राचीन काव्य।

प्रश्न पत्र ३ : विशेष स्तर : भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र तथा आलोचना।

प्रश्न पत्र ४ : विशेष स्तर : वैकल्पिक।

विशेष साहित्यकार -

[अ] कबीर

[आ] व्यंग्यकार - हरिशंकर परसाई

[इ] कवि - निराला

विशेष विधा -

[ई] हिन्दी उपन्यास

[उ] हिन्दी नाटक और रंगमंच

अन्य -

[ऊ] मराठी संतों का हिन्दी काव्य

१

परियोजनाएँ -

१] साहित्य और समाज अथवा

२] साहित्य और मनोविज्ञान

एम. ए. हिन्दी

प्रश्न पत्र – १   सामान्य स्तर।

आधुनिक गद्य – उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध और संस्मरण।

उद्देश्य – १] छात्रों को आधुनिक गद्य विधाओं के तात्त्विक स्वरूप से परिचित कराना।

२] आधुनिक गद्य विधाओं में से प्रमुख विधाओं के विकास-क्रम की छात्रों को जानकारी देना।

३] विधा-विशेष के ऐतिहासिक विकास के परिप्रेक्ष्य में रचना-विशेष का महत्त्व समझने तथा मूल्यांकन करने की क्षमता बढ़ाना।

पाठ्यपुस्तकें :-

१] अमृत और विष – अमृतलाल नागर – प्रकाशक-राजपाल एण्ड संस, दिल्ली।

२] प्रतिनिधी कहानियाँ – संपादक बच्चन सिंह – अनुराग प्रकाशन वाराणसी।
[अष्टम सं. १९८३]

[पत्नी, काकड़ों का तेली, जयदोल, उड़ान, वापसी, लालकिले का बाज, कहानियाँ छोड़कर]

३] एक और द्रोणाचार्य – डॉ. शंकर शेष

४] प्रिया नीलकण्ठी – कुबेरनाथ राय – भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,
न्यू दिल्ली।

[डूबता हुआ देवयान, आछी का पेड़, पैशाची; जरथुस्त्र और मैं, चण्डी थान, निर्गुण नक्षो: लवुज-श्याम धरती। एक ग्रीक प्रोषित-पतिका का आत्मकथ्य। निबन्धों को छोड़कर]

५] दीप जले शंख बजे – [संस्मरण] – कन्हैयालाल मिश्र "प्रभाकर"।
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन,
नई दिल्ली।

संदर्भ ग्रंथ :-

आज का हिन्दी उपन्यास – डॉ. इन्द्रनाथ मदान–राजकमल प्रका., दिल्ली।

अमृतलाल नागर के उपन्यासों का समाजशास्त्रीय अध्ययन–डॉ. नागेश राम
त्रिपाठी
–वैशाली प्रका., गोरखपुर.

अमृतलाल नागर व्यक्तित्व, कृतित्व एवं सिध्दांत–डॉ. सुरेश बत्रा
– विद्या प्रकाशन, कानपुर

अमृतलाल नागर का उपन्यास साहित्य– प्रकाशचन्द्र मिश्र
– युगवाणी प्रका. कानपुर

उपन्यासकार अमृतलाल नागर – दामोदर वशिष्ठ एवं आशा बागड़ी–
– मुद्रित प्रकाशन, आदर्श नगर, कैथल

साठोत्तरी हिन्दी कहानी – डॉ. के. एम. मालती, वार्ष्णेय प्रकाशन, नई दिल्ली
आज की हिन्दी कहानी – डॉ. धनंजय
नई कहानी की भूमिका – कमलेश्वर ;
समकालीन हिन्दी कहानी – डॉ. विनय

समकालीन हिन्दी नाटककार – गिरीश रस्तोगी –

आज का हिन्दी नाटक–प्रगति और प्रभाव – डॉ. दशरथ ओझा

नटशिल्पी शंकर शेष – डॉ. सुरेश गौतम, डॉ. वीणा गौतम
–शारदा प्रकाशन, नई दिल्ली

मिथक और स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक – रमेश गौतम
– नचिकेता प्रकाशन, नई दिल्ली

हिन्दी के पौराणिक नाटक – डॉ. बा. ए. जोशी
सरस्वती प्रकाशन, कानपुर

रंगधर्मी नाटककार शंकर शेष – डॉ. प्रकाश जाधव
सरस्वती प्रकाशन, कानपुर

हिन्दी के पौराणिक नाटकों के मूल स्त्रोत – शशिप्रभा शास्त्री

प्रतिनिधि हिन्दी निबन्धकार – डॉ. विभुराम मिश्र,
शिल्पी प्रकाशन, इलाहाबाद;

हिन्दी के प्रतिनिधि निबन्धकार – डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना,
विनोद पुस्तक, आगरा

हिन्दी ललित निबन्ध – स्वरूप एवं मूल्यांकन – सन्तराम देशमाल

हिन्दी ललित निबन्ध परंपरा एवं प्रयोग – डॉ. वेदवती राठी
–विद्या प्रकाशन, कानपुर.

कन्हैयालाल मिश्र "प्रभाकर" चिन्तन और साहित्य–डॉ. जयप्रकाश
नारायण सिंह
–अभय प्रकाशन, कानपुर

हिन्दी पत्रकारिता और कन्हैयालाल मिश्र "प्रभाकर"–डॉ. विश्वास पाटील
– साहित्य निलय, कानपुर.

कन्हैयालाल मिश्र "प्रभाकर" व्यक्ति और साहित्य–संपा.–डॉ. सुरेशचन्द्र
त्यागी
– आशिष प्रकाशन, सहारनपुर.

. . ४ . .

प्रश्नपत्र-२ विशेष स्तर-प्राचीन काव्य।

उद्देश्य – १] हिन्दी के प्राचीन कवियों में से कुछ प्रमुख एवं प्रतिनिधि कवियों की कृतियों के अध्ययन द्वारा प्राचीन काव्य का परिचय कराना।

२] आदिकालीन, भक्तिकालीन तथा रीतिकालीन काव्य-प्रवृत्तियों की जानकारी देना।

३] प्राचीन काव्य प्रवृत्तियों की पृष्ठभूमि पर कवि विशेष की काव्यकला का परिचय प्राप्त करना।

पाठ्यक्रम में निर्धारित कवि –

१] विद्यापति, २] मलिक मुहम्मद जायसी, ३] तुलसीदास,
४] बिहारी, ५] भूषण।

आदिकालीन काव्य, भक्तिकालीन काव्य, रीतिकाव्य की प्रवृत्तियों का संक्षिप्त परिचय तथा उसके परिप्रेक्ष्य में निर्धारित कवियों का अध्ययन अपेक्षित है। प्रत्येक कवि के अध्ययन की दृष्टि से अपेक्षित अध्ययनार्थ विषय तथा ससंदर्भ व्याख्या के लिए छंद दिये गये हैं –

१] विद्यापति – संपादक-डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित।
साहित्य प्रकाशन, मंदिर, ग्वालियर।

ससंदर्भ व्याख्या के लिए– १, २, ९, १२, १६, १९, २३, २५, २७, ५९, ६६, ७४।

अध्ययनार्थ विषय – विद्यापति द्वारा वर्णित– १]विद्यापति–भक्त कवि या शृंगारी कवि, २]सौंदर्य चित्रण, ३]भक्ति भावना, ४]संयोग शृंगार, ५]वियोग शृंगार, ६]काव्य रूप–मुक्तक, गीतिकाव्य, ७]काव्यकला।

२] पद्मावत – मलिक मुहम्मद जायसी–संपादक–डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल
साहित्य भवन, चिरगांव, झाँसी।

ससंदर्भ व्याख्या के लिए–सिंहल द्वीप वर्णन खण्ड, मानसरोदक, नागमति वियोग खण्ड।

अध्ययनार्थ विषय – १]पद्मावत में इतिहास और कल्पना का समन्वय, २]प्रेम भावना, ३]वियोग वर्णन, ४]रूप सौंदर्य चित्रण, ५]रहस्यवाद, ६]प्रकृति–चित्रण, ७]महाकाव्यत्व, ८]अन्योक्ति–समासोक्ति।

३] **कवितावली** – तुलसीदास – गीताप्रेस, गोरखपुर।

ससंदर्भ के लिए पद–बालकाण्ड–१, २, ४, ५, ८, ११, १८, २०
अयोध्या काण्ड – १, ६, ७, ८, ११, १३, १८, २०, २२
सुन्दर काण्ड – ३, ५, १०, ११, १५, २४, २५
लंकाकाण्ड – १८, ४०, ४२
उत्तर काण्ड – ३६, २७, १०६, १४८

अध्ययनार्थ विषय– १]कवितावली का प्रतिपाद्य, २]भक्ति भावना, ३]कवितावली की विशेषताएँ, ४]भावात्मकता तथा रस योजना, ५]काव्य सौंदर्य, ६]मार्मिक प्रसंग।

४]**बिहारी प्रकाश** – संपादक–विश्वनाथ प्रसाद मिश्र–
प्रकाशन–लोकभारती, इलाहाबाद।

ससंदर्भ व्याख्या के लिए – सभी दोहे

अध्ययनार्थ विषय – बिहारी द्वारा वर्णित – १]संयोग श्रृंगार, २]वियोग श्रृंगार, ३]प्रसंगोद्भावना, ४]श्रृंगारेतर भावना–भक्ति, नीति, ५]सौंदर्य चित्रण, ६]अनुभाव–योजना, ७]काव्यसा–मुक्तक, ८]सतसई परंपरा और बिहारी, ९]काव्य–सौंदर्य – भाषा–शैली, अलंकार योजना इ०, १८]बिहारी की बहुज्ञता।

५] **संक्षिप्त भूषण** – संपादक – डॉ. भगवानदास तिवारी
साहित्य भवन, इलाहाबाद।

ससंदर्भ के लिए छंद – १, २, १७, १८, २०, २३, २६, २७, २८, ३०, ३३, ३५, ४३, ६८, ७९

अध्ययनार्थ विषय – १]भूषण और युग जीवन, २]वीर काव्यधारा, रीतिकालीन वीर काव्य और भूषण, ३]भूषण और उनका साहित्य, ४]भूषण काव्य के वर्ण्य विषय [प्रतिपाद्य] ५]रस विवेचन, ६]भूषण की राष्ट्रीयता, ७]भूषण काव्य का कलापक्ष, ८]भूषण की भाषा, ९]प्रकृति–चित्रण।

संदर्भ ग्रंथ :-

विद्यापति : आलोचना और संग्रह – डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित
विद्यापति : युग और साहित्य – डॉ. अरविंद नारायण सिंह
विद्यापति की काव्य प्रतिभा – डॉ. गोविंद राम शर्मा
विद्यापति और उनका काव्य – डॉ. शुभकार कपूर
मलिक मुहम्मद जायसी और उनका काव्य – डॉ. शिवसहाय पाठक
जायसी का पद्मावत–काव्य और दर्शन– डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत
पद्मावत में काव्य, संस्कृति और दर्शन – डॉ. द्वारिकाप्रसाद सक्सेना
पद्मावत का काव्य – सौंदर्य – डॉ. चन्द्रबली पाण्डेय
तुलसीदास और उनका काव्य – रामदत्त भारद्वाज
तुलसी काव्य मीमांसा – डॉ. उदयभानु सिंह
तुलसी का प्रगीत काव्य – विनय कुमार
तुलसी रसायन – डॉ. भगीरथ मिश्र
तुलसीदास – डॉ. माताप्रसाद गुप्त
तुलसी आधुनिक वातायन से – डॉ. रमेश कुंतल
बिहारी का नया मूल्यांकन – डॉ. बच्चन सिंह
बिहारी मीमांसा – डॉ. राम सागर त्रिपाठी
बिहारी का काव्य लालित्य – डॉ. रमाशंकर तिवारी
भूषण और उनका साहित्य – डॉ. राजमल बोरा
लोकवादी तुलसीदास – विश्वनाथ त्रिपाठी
तुलसी साहित्य में भक्ति, नीति और दर्शन – डॉ. हरिश्चंन्द्र वर्मा

प्रश्नपत्र–३ विशेष स्तर

* भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र तथा आलोचना *

उद्देश्य – १] भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र का संक्षिप्त, सामान्य परिचय देना।

२] भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्यशास्त्र [काव्यशास्त्रीय] सिध्दांतों के विकास क्रम का संक्षिप्त परिचय तथा सिध्दांतों का ज्ञान।

३] आलोचना की विभिन्न प्रणालियों का परिचय।

४] साहित्य शास्त्रीय आलोचना की दृष्टि देना तथा समीक्षा क्षमता में अभिवृध्दि करना।

सूचनाएँ – १] विद्यार्थियों के लिए भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र के विकासक्रम का ज्ञान आवश्यक है, तथापि परीक्षा में इस अध्याय पर कोई प्रश्न नहीं होगा।

२] भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य शास्त्रीय सिध्दांतों का अध्ययन, अध्यापन करते समय दोनों प्रकार के सिध्दांतों में होनेवाले तुलनात्मक बिन्दुओं का संकेत तथा विवेचन आवश्यक है।

अध्ययनार्थ पाठ्यक्रम :-

१] भारतीय काव्यशास्त्र / साहित्यशास्त्र के विकास क्रम का संक्षेप में परिचय।

२] रस सिध्दांत–रस का स्वरूप, रस निष्पत्ति विषयक भरतमुनि का सूत्र और भट्ट लोल्लट, शंकुक, भट्ट नायक और अभिनव गुप्त की तत्संबंधी व्याख्याओं का विवेचन। साधारणीकरण – भट्टनायक, अभिनव गुप्त, पंडितराज जगन्नाथ, विश्वनाथ, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. नगेन्द्र, डॉ. नामवर सिंह, डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित के मतों के संदर्भ में विवेचन, वर्तमान संदर्भ में रस सिध्दांत।

३] अलंकार सिध्दांत – अलंकार शब्द की व्युत्पत्ति, और अलंकार की परिभाषा, अलंकार सिध्दांत का स्वरूप, काव्य में अलंकार का स्थान।

.. ८ ..

४] रीति-सिद्धांत- "रीति" शब्द की व्युत्पत्ति और रीति की परिभाषा, रीति के विविध पर्याय, रीतिभेदों के आधार, रीतिभेद, रीति और गुण, रीति और शैली।

५] ध्वनि सिद्धांत - "ध्वनि" शब्द की व्युत्पत्ति, परिभाषा, ध्वनि और स्फोट सिद्धांत, ध्वनि और शब्दशक्ति, ध्वनि के भेद-अभिधामूला, लक्षणामूला, संलक्ष्यक्रम व्यंग्य, असंलक्ष्यक्रम व्यंग्य, तात्पर्यवृत्ति।

६] वक्रोक्ति सिद्धांत - वक्रोक्ति की परिभाषा, कुंतक पूर्व वक्रोक्ति वक्रोक्ति सिद्धांत का स्वरूप, वक्रोक्ति के भेद, वक्रोक्ति का महत्व।

७] औचित्य सिद्धांत -औचित्य का स्वरूप, काव्य में औचित्य का महत्व।

८] पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांतो का संक्षेप में परिचय।

९] अनुकरण सिद्धांत - अनुकरण की व्याख्या-सिद्धांत का स्वरूप, अनुकरण के सम्बन्ध में प्लेटो और अरस्तू के विचारों का तुलनात्मक परिचय।

१०] विरेचन सिद्धांत-प्लेटो, अरस्तू के विचारों का विवेचन।

११] उदात्त सिद्धांत - लोंजाइस द्वारा उदात्त की व्याख्या, सिद्धांत का स्वरूप, उदात्त के अन्तरंग-बहिरंग तत्व, उदात्त के विरोधी तत्व, काव्य में उदात्त का महत्व।

१२] क्रोचे का अभिव्यंजनावाद -अभिव्यंजनावाद का स्वरूप, वक्रोक्ति और अभिव्यंजनावाद।

१३] मनोवैज्ञानिक मूल्यवाद और संप्रेषण सिद्धांत--काव्य मूल्यों की मनोवैज्ञानिक व्याख्या, मनोवेगों के दो प्रकार, मनोवेगो में संतुलन, संप्रेषण का स्वरूप एवं महत्व, रिचर्ड्स का योगदान।

१४] निर्वैयक्तिकता सिद्धांत और वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता सिद्धांत-
इलियट की निर्वैयक्तिकता की धारणा, परिवर्तित धारणा,
व्यक्तिगत भावों का सामान्यीकरण।
वस्तुनिष्ठ प्रतिरूपता, सिद्धांत का स्वरूप-विशद विधान या
भावप्रदर्शन प्रणाली, भारतीय काव्यशास्त्र के साधारणीकरण से तुलना।

१५] निम्नलिखित वादों का परिचयात्मक अध्ययन-
कलावाद, यथार्थवाद, प्रतीकवाद, बिम्बवाद, अस्तित्ववाद।

१६] आलोचना- स्वरूप और उद्देश्य, आलोचक के गुण,
आलोचना के विभिन्न प्रकार = सैद्धांतिक, व्याख्यात्मक,
तुलनात्मक, स्वच्छन्दतावादी, मनोवैज्ञानिक एवं प्रगतिवादी आलोचना।

संदर्भ ग्रंथ :-

काव्यशास्त्र — डॉ. भगीरथ मिश्र
रस सिद्धांत-स्वरूप, विश्लेषण — डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित
भारतीय साहित्यशास्त्र-खण्ड १ और २- आचार्य बलदेव उपाध्याय
साहित्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धांत — डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत — कृष्णदेव शर्मा
रस मीमांसा — आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
औचित्य विमर्श — डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी
समीक्षाशास्त्र के भारतीय एवं पाश्चात्य मानदण्ड-डॉ. रामसागर त्रिपाठी
समीक्षा लोक — डॉ. भगीरथ दीक्षित
भारतीय काव्यशास्त्र के सिद्धांत — डॉ. सुरेश अग्रवाल
पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत और विविध वाद -डॉ. ज्ञानराज
काशिनाथ गायकवाड
पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धांत — कृष्णदेव शर्मा
अरस्तू का काव्यशास्त्र — डॉ. नरेन्द्र
उदात्त के विषय में — डॉ. निर्मला जैन
रिचर्ड्स के आलोचना सिद्धांत — डॉ. शम्भुदत्त झा
टी. एस. इलियट के आलोचना सिद्धांत-डॉ. त्रिमूर्ती पाण्डेय
हिन्दी आलोचना उद्भव और विकास-डॉ. भगवत्स्वरूप मिश्र
आलोचना के बदलते मानदण्ड और हिन्दी साहित्य-डॉ. शिवचरण सिंह
पाश्चात्य काव्यशास्त्र — देवेन्द्रनाथ शर्मा
भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य शास्त्र — सत्यदेव चौधरी और
शांतिस्वरूप गुप्त
पाश्चात्य समीक्षा की रूपरेखा — डॉ. प्रताप नारायण टंडन

प्रश्नपत्र ४[अ] विशेष स्तर:वैकल्पिक

विशेष साहित्यकार :- कबीर

उद्देश्य :-१] विशेष साहित्यकार के रूप में कबीर के साहित्यिक व्यक्तित्व एवं कृतित्व का ज्ञान।

२] युगीन परिप्रेक्ष्य में कबीर के काव्य की प्रेरणाओं तथा विशेषताओं का अध्ययन।

३] कबीर काव्य की प्रासंगिकता के संदर्भ में उनके योगदान पर प्रकाश तथा साहित्यिक व्यक्तित्व का मूल्यांकन।

[अ] अध्ययन और आलोचना –

१] भक्ति आंदोलन और निर्गुण भक्ति।
२] संत काव्य परंपरा और कबीर।
३] कबीर और उनका साहित्य।
४] क्रान्तिदर्शी कबीर।
५] कबीर का प्रेमतत्त्व-विरह भावना और रहस्य।
६] कबीर की भक्तिभावना।
७] कबीर की दार्शनिकता।
८] कबीर काव्य की प्रासंगिकता।
९] कबीर की उलटवासियाँ।
१०] कबीर का लोकचिंतन।
११] कबीर के काव्य का कलापक्ष।

[आ] मूल पाठ व्याख्यात्मक –

पाठ्य पुस्तक- कबीर ग्रंथावली
संपादक-डॉ. श्याम सुंदर दास।
नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।

साखी –

गुरुदेव कौ अंग – ३, ६, १२, १४, १५, १६, २१, २६, ३३, ३४

विरह कौ अंग – ४, ५, ६, ७, ९, ११, १२, १४, १५, १८, २०, २१, २२, २३, २५, २६, ३३, ३५, ४१, ४५

परचा कौ अंग – १, ३, ९, १०, ११, १२, १६, १७, २१, २२, २४, २७, ३१,
३२, ३५, ३६, ३९, ४३, ४४, ४५

निहकर्मी पतिव्रता कौ अंग – २, ३, १०, ११, १४

चितावणी कौ अंग – १, ४, ८, १२, १६, १९, २०, ३४, ४४, ४५

काल कौ अंग – १, १३, १४, १५, २०

निंदा कौ अंग – २, ३, ४, ६, ८

पद – १, ८, ११, १६, ४०, ४३, ५५, ५९, ९२, १११, ११७, १५६, १८०,
१८६, १९८, २६०, २५१, २७४, २९०, ३२९, ३३२, ३३८, ३४६,
३९६, ४००

रमैणी – राग सूही – १

अष्टपदी रमैणी – ५

संदर्भ ग्रंथ –

कबीर – हजारीप्रसाद द्विवेदी.

कबीर – सं. डॉ. विजयेन्द्र स्नातक

कबीर की विचार धारा – डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत

कबीर साहित्य की परख – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

कबीर साधना और साहित्य – डॉ. प्रताप सिंह चौहान

निर्गुण काव्यधारा और उसकी दार्शनिक पृष्ठभूमि – डॉ. गोविन्द त्रिगुणायत

हिन्दी संतो का उलटबासी साहित्य – डॉ. रमेशचन्द्र मिश्र

संत साहित्य की लौकिक पृष्ठभूमि – ओम प्रकाश शर्मा

कबीर का रहस्यवाद – डॉ. रामकुमार वर्मा

कबीर के दर्शन और काव्य के स्रोत – सीताराम सिंह

कबीर साहित्य में योग स्मक – डॉ. भगवत प्रसाद दुबे

कबीर साहब का रहस्यवाद – आचार्य परशुराम चतुर्वेदी.

कबीरदास व्यक्ति और चिंतन – डॉ. आनन्द प्रकाश दीक्षित

कबीर – एक विवेचन – डॉ. सरनाम सिंह शर्मा "अरुण"

कबीर मीमांसा – डॉ. रामचन्द्र तिवारी

कबीर जीवन और दर्शन – डॉ. भोलानाथ तिवारी

नाथ और संत साहित्य – डॉ. नागेन्द्रनाथ उपाध्याय

कबीर की भाषा – महेन्द्रकुमार

प्रश्न पत्र-४ [आ] विशेष स्तर – वैकल्पिक।

विशेष साहित्यकार – हरिशंकर परसाई।

उद्देश्य :-

[१] व्यंग्य के स्वरूप को समझते हुए हास्य और व्यंग के अंतर को समझना।

[२] व्यंग्य विधा के विकास क्रम का अध्ययन करना।

[३] व्यंग्य के विभिन्न प्रकारों से अवगत होना।

[४] परिवेश एवं व्यंग्य के सम्बन्धों से परिचित होना।

अध्ययनार्थ पाठ्यपुस्तके :-

[१] ठिठुरता हुआ गणतंत्र –हरिशंकर परसाई

[नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली]

[२] सदाचार का तावीज –हरिशंकर परसाई

[भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली]

[३] वैष्णव की फिसलन – हरिशंकर परसाई

[राजकमल प्रकाशन, दिल्ली]

[४] रानी नागफनी की कहानी – हरिशंकर परसाई।

[५] विकलांग श्रद्धा का दौर।

अध्ययनार्थ विषय :-

[१] व्यंग्य की व्याख्या, स्वरूप, तत्व और प्रयोजन

[२] हास्य और व्यंग्य में अंतर।

[३] व्यंग्य के विभिन्न प्रकार।

[४] हिन्दी व्यंग्य साहित्य की परंपरा और विकास।

[५] परसाई साहित्य का प्रतिपाद्य।

[६] व्यंग्य – साहित्यकार परसाई – व्यक्ति और परिवेश।

[७] परसाई साहित्य की विधात्मक विविधता–उपन्यास, कहानी,
निबंध, लघुलेख इ.

[८] परसाई का जीवन दर्शन और मूल्य दृष्टि

[९] परसाई का व्यंग्य साहित्य – विषयगत और शैलिगत विशेषताएँ

[१०] परसाई के व्यंग्य की भाषा

[११] परसाई साहित्य का अवदान

संदर्भ ग्रंथ :–

परसाई रचनावली–खण्ड १ से ३, संपादक–कमलाप्रसाद
[राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली]

हरिशंकर परसाई का व्यक्तित्व और कृतित्व – डॉ. मनोहर देवलिया
[साहित्यवाणी, इलाहाबाद]

हरिशंकर परसाई की दुनिया – डॉ. मनोहर देवलिया
[साहित्यवाणी, इलाहाबाद]

हरिशंकर परसाई व्यंग्य की वैचारिक पृष्ठभूमि – प्रो. राधेमोहन शर्मा
[भूमिका प्रका. दरियागंज, नई दिल्ली]

हरिशंकर परसाई के व्यंग्यों में वर्ग चेतना – कु. आशा भट्ट
[जयभारती प्रका., इलाहाबाद]

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य का मूल्यांकन–डॉ. सुरेश माहेश्वरी
[विकास प्रका. कानपुर]

हिन्दी व्यंग्य विधाशास्त्र और इतिहास–डॉ. बापूराव देसाई
[चिंतन प्रका. कानपुर]

व्यंग्य का समाज दर्शन–डॉ. सुरेश आचार्य
[तार्किक प्रका. नई दिल्ली]

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी व्यंग्य निबन्ध – डॉ. शशि मिश्र
[संजय प्रका. ए–३४, बिल्वकुंज हाऊ.
सोसा., मुलुंड [प.] मुंबई–८२]

हिन्दी व्यंग्य के प्रतिमान – डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी
[गिरनार प्रका. महेसाना]

व्यंग्यालोचन – डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी;
[सहयात्री प्रका. राँची]

व्यंग्य विवेचन – डॉ. श्यामसुंदर घोष– [पराग प्रका., दिल्ली–११० ०३२]

व्यंग्य क्या? व्यंग्य क्यों? डॉ. श्यामसुंदर घोष;
[सत्साहित्य प्रका. दिल्ली]

व्यंग्य ही व्यंग्य – डॉ. बालेन्दु शेखर तिवारी.
[सत्साहित्य प्रका. दिल्ली]

आँखन देखी – सं. कमलाप्रसाद [वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली]

प्रश्नपत्र-४ [इ]   विशेष स्तर-वैकल्पिक

विशेष साहित्यकार – कवि निराला

उद्देश्य :-१] विशेष साहित्यकार के रूप में कवि निराला के साहित्यिक व्यक्तित्व का ज्ञान कराना ।

२] युगीन पृष्ठभूमि पर निराला के काव्य की प्रवृत्तियों का परिचय और उस परिप्रेक्ष्य में निर्धारित प्रमुख रचनाओं का विशेष ज्ञान तथा अन्य काव्य-कृतियों का सामान्य ज्ञान कराना ।

३] कवि के रूप में निराला की काव्य कला का मूल्यांकन, आस्वादन कराना ।

अध्ययन के लिए निर्धारित पाठ्यग्रंथ –

१] परिमल – केवल निम्नलिखित रचनाएँ-

१] यमुना के प्रति
२] तुम और मैं
३] माया
४] गीत-अलि, घिर आए घन पावस के
५] ध्वनि
६] विधवा
७] भिक्षुक
८] संध्यासुंदरी
९] धारा
१०] आवाहन
११] बादल राग-[संपूर्ण]
१२] जुही की कली
१३] जागो फिर एक बार
१४] महाराज शिवाजी का पत्र

२] अनामिका – केवल निम्नलिखित रचनाएँ –

१] दान
२] दिल्ली
३] तोड़ती पत्थर
४] हिन्दी के सुमनों के प्रति पत्र
५] सरोज –स्मृति
६] राम की शक्ति पूजा

३] गीतिका – केवल निम्नलिखित गीत–

१] वर दे, वीणा वादिनी वर दे !
२] यामिनी जागी
३] सखि, वसंत आया
४] नर जीवन के स्वार्थ सकल
५] कल्पना के कानन की रानी .
६] पास ही रे, हीरे, की खान .
७] मुझे स्नेह क्या मिल न सकेगा
८] जीवन की तरी खोल दे रे
९] डूबा रवि अस्ताचल
१०] प्रात: तव द्वार पर

४] तुलसीदास – [खण्ड काव्य] संपूर्ण ।

५] कुकुरमुत्ता – [संपूर्ण] ।

[परीक्षा में पाठ्यपुस्तकों से निर्धारित कविताओं पर ससंदर्भ व्याख्या का प्रश्न पूछा जाएगा]

अध्ययनार्थ विषय :–

१] निराला के युग की पृष्ठभूमि
२] निराला का व्यक्तित्व
३] निराला के काव्य का क्रमिक विकास
४] छायावाद और निराला
५] निराला के काव्य में प्रगतिवादी चेतना

६) निराला के काव्य में प्रकृति
७) निराला का विद्रोह
८) निराला के काव्य में मानवतावाद
९) निराला की प्रबन्धात्मकता
१०) निराला के काव्य में गीति-तत्त्व
११) निराला का शिल्पविधान

संदर्भ ग्रंथ –

निराला की साहित्य साधना – भाग-१ व भाग-२ रामविलास शर्मा
निराला – सं. इन्द्रनाथ मदान
निराला – पद्मसिंह शर्मा कमलेश
क्रांतिकारी कवि निराला – डॉ. बच्चन सिंह
निराला काव्य का अध्ययन – भगीरथ मिश्र
निराला की काव्य भाषा – डॉ. शकुंतला मिश्र
निराला की काव्यभाषा – डॉ. शिवशंकर सिंह
महाप्राण निराला – गंगाप्रसाद पाण्डेय
निराला – डॉ. रामविलास शर्मा
निराला : नव मूल्यांकन – डॉ. रामरतन भटनागर
निराला काव्य पुनर्मूल्यांकन – धनंजय वर्मा
निराला और उनकी गीतिका – डॉ. रामकुमार सिंह
निराला साहित्य : एक नया आयाम – डॉ. रामकुमार गुप्त

प्रश्नपत्र-४ [ई]   विशेष स्तर-वैकल्पिक

विशेष विधा : हिन्दी उपन्यास।

उद्देश्य :- १] साहित्य विधाओं में प्रमुख विधा-उपन्यास विधा के तात्विक स्वरूप की जानकारी देना।

२] हिन्दी उपन्यासों के विकास क्रम का ज्ञान।

३] हिन्दी उपन्यासों की विभिन्न प्रवृत्तियों का परिचय।

४] हिन्दी उपन्यास के विकास क्रम के परिप्रेक्ष्य में निर्धारित प्रमुख प्रतिनिधि उपन्यासों का अध्ययन।

विशेष अध्ययन के लिए उपन्यास -

१] गोदान - प्रेमचंद
२] त्यागपत्र - जैनेन्द्र कुमार
३] बाणभट्ट की आत्मकथा - हजारीप्रसाद द्विवेदी
४] मनुष्य के रूप - यशपाल
५] मैला आँचल - फणीश्वरनाथ रेणु

अध्ययनार्थ विषय :-

१] उपन्यास की परिभाषा - उपन्यास के तत्त्व, शिल्पविधान।

२] उपन्यास तथा अन्य कथात्मक विधाएँ -उपन्यास और कहानी, उपन्यास और नाटक, उपन्यास और महाकाव्य, उपन्यास और जीवनी।

३] हिन्दी उपन्यासों का विकास - प्रेमचन्दपूर्व, प्रेमचन्दकालीन, प्रेमचन्दोत्तर परंतु स्वातंत्र्यपूर्व, स्वातंत्र्योत्तर उपन्यास।

४] हिन्दी उपन्यासों की प्रवृत्तियाँ -सामाजिक, ऐतिहासिक, राजनीतिक, आँचलिक, समस्यामूलक, मनोवैज्ञानिक, अस्तित्ववादी एवं वैज्ञानिक।

५] उपर्युक्त हिन्दी उपन्यासों की प्रवृत्तियों के संदर्भ में निम्नलिखित प्रतिनिधि उपन्यासों का विशेष अध्ययन निर्धारित है -

गोदान, त्यागपत्र, बाणभट्ट की आत्मकथा, मनुष्य के रूप, मैला आँचल।

- संदर्भ ग्रंथ -

उपन्यास तत्व एवं रूप विधान - श्री. नारायण अग्निहोत्री
हिन्दी उपन्यास : शिल्प और प्रयोग - डॉ. त्रिभुवन सिंह
आधुनिक उपन्यासों में वस्तु विन्यास - डॉ. सरोजिनी त्रिपाठी
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में राजनैतिक और आर्थिक चेतना-
डॉ. पीताम्बर सरोदे

आज का हिन्दी उपन्यास - डॉ. इन्द्रनाथ मदान
उपन्यास : स्थिति और गति - डॉ. चन्द्रकांत बांदिवडेकर
हिन्दी उपन्यास एक अन्तर्यात्रा - डॉ. रामदरश मिश्र
हिन्दी के आँचलिक उपन्यास और उनकी शिल्प विधि-डॉ. आदर्श सक्सेना
स्वातंत्र्योत्तर आँचलिक उपन्यास -सुभाषिणी शर्मा
हिन्दी के मनोवैज्ञानिक उपन्यास - डॉ. धनराज मानधाने
ऐतिहासिक उपन्यास प्रवृत्ति और स्वरूप-सं. गोविन्द्र जी
प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना-डॉ. अमरसिंह लोधा
आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास-डॉ. इन्द्रनाथ मदान
हिन्दी उपन्यास के सौ वर्ष - संपादक-डॉ. रामदरश मिश्र
समकालीन हिन्दी उपन्यास -कथ्य विश्लेषण - डॉ. प्रेमकुमार
हिन्दी उपन्यासों में मार्क्सवादी चेतना - डॉ. विरेन्द्रकुमार
आधुनिक उपन्यास विविध आयाम - डॉ. विवेकी राय
यशपाल साहित्य में काम-चेतना - डॉ. सौ. शकुंतला चव्हाण

प्रश्नपत्र –४ [उ] विशेष स्तर–वैकल्पिक

विशेष विधा – हिन्दी नाटक और रंगमंच।

उद्देश्य :– १] काव्य की सर्वाधिक रम्य विधा नाटक और रंगमंच का ज्ञान।

२] नाटक के तात्त्विक रूप का परिचय।

३] हिन्दी नाटक के विकास-क्रम का ज्ञान और नवनवीन नाट्यशैलियों के अध्ययन के लिए रुचि बढ़ाना।

४] नाटक और रंगमंच के सम्बन्ध के संदर्भ में हिन्दी रंगमंच के विकास का परिचय।

अध्ययन के लिए निर्धारित नाटक :–

१] ध्रुवस्वामिनी	– जयशंकर प्रसाद
२] दर्पण	– लक्ष्मीनारायण लाल
३] कोणार्क	– जगदीशचन्द्र माथुर
४] आषाढ़ का एक दिन	– मोहन राकेश
५] तालों में बंद प्रजातंत्र	– विभुकुमार

अध्ययनार्थ विषय :–

१] नाटक की परिभाषा और तत्त्व।

२] हिन्दी नाटक का उद्भव और विकास – पूर्व पीठिका–

–भारतेन्दु पूर्व हिन्दी नाटक
–भारतेन्दुयुगीन हिन्दी नाटक
–प्रसादकालीन हिन्दी नाटक
–प्रसादोत्तर हिन्दी नाटक
–स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक

३] हिन्दी नाटक के विकास में आये विभिन्न परिवर्तन एवं विशेषताएँ।

४] नाटक के भेद – पौराणिक, ऐतिहासिक, स्वच्छंदतावादी, सामाजिक।

५] नाटक की विभिन्न शैलियाँ –

इन शैलियों के अध्ययन में उनके स्वरूप, संक्षिप्त विकास क्रम और विशेषताओं का सोदाहरण परिचय अपेक्षित है।

..२२..

६] लोकनाट्य, गीतिनाट्य, भावनाट्य, अन्योक्ति नाटक, नृत्य-नाटक, संगीतिका, स्वौकिक नाटक, प्रतीक नाटक, एब्सर्ड नाटक, रेडियोनाटक, दूरदर्शन नाटक।

७] एकांकी-नाटक, तात्त्विक स्वरूप, संक्षिप्त विकास क्रम, प्रमुख प्रतिनिधी एकांकीकार।

८] अनूदित नाटक – अन्य भारतीय भाषाओं से हिन्दी में अनूदित नाटकों की परंपरा का संक्षिप्त सोदाहरण परिचय।

-: संदर्भ ग्रंथ :-

हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास – डॉ. दशरथ ओझा
भारतीय नाट्यशास्त्र और रंगमंच – डॉ. रामसागर त्रिपाठी
हिन्दी नाटक की शिल्पविधि – डॉ. गिरिजा सिंह
आधुनिक हिन्दी नाटक – डॉ. नगेन्द्र
हिन्दी नाटक : सिध्दांत और विवेचन – डॉ. गिरीश रस्तोगी
हिन्दी नाटक : सिध्दांत और विवेचन – सं. डॉ. महेन्द्र
हिन्दी नाटक साहित्य का इतिहास – डॉ. सोमनाथ गुप्त
हिन्दी नाटकों का रूप विधान और वस्तु विकास–डॉ. चन्द्रलाल दुबे
नाटक और नाट्यशैलियाँ – डॉ. दुर्गा दीक्षित
आधुनिक हिन्दी नाटकों पर आंग्ल नाटकों का प्रभाव–डॉ. विश्वनाथ प्रसाद।
हिन्दी और मराठी के ऐतिहासिक नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन–
– डॉ. सुमटकर
हिन्दी के पौराणिक नाटक – देवर्षि सनाढ्य
हिन्दी के स्वच्छंदतावादी नाटक – डॉ. दशरथ सिंह।
हिन्दी नाट्य साहित्य और रंगमंच की मीमांसा–कुँवर चन्द्रप्रकाश सिंह।
हिन्दी के गीतिनाट्य – कृष्णदेव सिंहल।
हिन्दी रेडियो नाटक – अद्यतन अध्ययन – डॉ. जयभगवान गुप्ता
एब्सर्ड नाट्य परंपरा – डॉ. राजसेवक सिंह
हिन्दी रंगमंच का उद्भव और विकास – डॉ. विश्वनाथ शर्मा
हिन्दी रंगमंच का इतिहास – डॉ. चन्द्रलाल दुबे।
पारसी थियेटर – उद्भव और विकास – सोमनाथ
पारसी हिन्दी रंगमंच – डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल
आधुनिक हिन्दी नाटक और रंगमंच – नेमिचन्द्र जैन।
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी रंगमंच – डॉ. ओमप्रकाश शर्मा।

.. २३ ..

प्रश्नपत्र-४ (ऊ)   विशेष स्तर – वैकल्पिक

[अन्य] – मराठी संतों का हिन्दी काव्य।

उद्देश्य :- विद्यार्थियों को निम्नलिखित विषयों से अवगत कराना।

१] मराठी के अहिन्दी भाषी संतों-कवियों की हिन्दी सेवा का, संत साहित्य का तथा संत संप्रदायों का परिचय।

२] संत काव्य के अध्ययन के माध्यम से राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक एकता का भावना बढ़ाना।

पाठ्यग्रंथ एवं ससंदर्भ व्याख्या के लिए पद –

१] मराठी संतो की हिन्दी वाणी – सं. आनन्द प्रकाश दीक्षित

संत नामदेव – पद संख्या – १, ३, ४, ११, २५

संत एकनाथ – पद संख्या – ४, ९, १२, १७, १८

संत तुकाराम-पद संख्या – २, ८, ९, ११, १२

संत बहिणाबाई पद संख्या-३, ६, १२, १४, १६

२] महाराष्ट्र के संतो का हिन्दी काव्य – सं. डॉ. प्रभाकर पंडित

प्रथम दस पद।

३] रामभक्ति शाखा के अज्ञात कवि – डॉ. मुरलीधर शहा

[संत जन-जसवंत की पदावली]

२, १५, १७, १८, २०, ३१, ३६, ३७, ३८, ४६

अध्ययनार्थ विषय –

१] दक्षिण भारत में हिन्दी प्रचार।

२] महाराष्ट्र के प्रमुख पाँच संत संप्रदायों का परिचय – नाथ, महानुभाव, वारकरी, दत्त, समर्थ

३] मराठी संतों की हिन्दी काव्य परंपरा

४] पठित पदों के संदर्भ में भाव एवं कला की विशेषताएँ

५] मराठी संतों द्वारा प्रयुक्त विशिष्ट छंद और काव्यप्रकार

६] मराठी संतों की भक्ति – भावना।

७] वर्तमान युग के संदर्भ में हिन्दी संत काव्य की उपयोगिता

संदर्भ ग्रंथ –

हिन्दी को मराठी संतों की देन – आचार्य विनय मोहन शर्मा

संत नामदेव की हिन्दी पदावली – डॉ. भगीरथ मिश्र

संत नामदेव और हिन्दी पद-साहित्य – डॉ. रामचन्द्र मिश्र

हिन्दी निर्गुण काव्य का प्रारंभ और संत नामदेव की हिन्दी कविता –
– डॉ. शं. के. आडकर

हिन्दी और मराठी का निर्गुण संत काव्य – डॉ. प्रभाकर माचवे

हिन्दी और मराठी वैष्णव संत साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन –
– डॉ. न. चिं. जोगळेकर

मराठी का भक्ति साहित्य – डॉ. भी. गो. देशपांडे

मराठी संतों का सामाजिक कार्य – डॉ. वि. भा. कोलते

महाराष्ट्र के प्रमुख साधना सम्प्रदाय – डॉ. र. श. चिपलकर

****

पी३/